INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

"कोविड -19 अवधि के दौरान सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव"

(Changes in social conditions during the Covid-19 period)

कुलजिन्दर सिंग
सह अध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
ए. एस. कालेज खन्ना, लुधियाना (पंजाब)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2021-49714333/IRJHIS2106030

शोध सारांश : (Abstract)

कोविड-19 एक नई बीमारी है जो किसी व्यक्ति के फेफड़े, श्वसन तंत्र और अन्य अंगों को प्रभावित कर सकती है। आप कोविड-19 को फैलने से रोकने के लिए जितना हो सके जरूरी स्वच्छता उपायों का पालन कर सकते हैं। कोविड-19 को 2019 में एक प्रकोप से जोड़ा गया है, जो एक नए प्रकार का कोरोनावायरस है जो किसी व्यक्ति के फेफड़ों और श्वसन प्रणाली को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। दूसरे शब्दों में, यह बहुत बड़े और विविध प्रकार के वायरस के पूरे नए परिवार के सदस्यों में से एक है जो आम तौर पर सामान्य सर्दी जैसी बीमारियों का कारण बनता है।कोविड-19 का पहला प्रकोप दिसंबर 2019 की शुरुआत में चीन के वुहान में हुआ था[कोविड-19का शाब्दिक अर्थ कोविड-19 नामक विश्व स्वास्थ्य संगठन के रूप में व्याख्या किया गया है जिसमें Co का अर्थ है कोरोना और Vi का अर्थ है वायरस, और D का अर्थ रोग और 19 का अर्थ वर्ष 2019 है जिसमें यह वायरसमिला था। इस प्रकार इसका शाब्दिक अर्थ समझाया गया है। कोविड -19 वायरस मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की नाक से लार या छींक की कुछ बूंदों से फैलता है, जिसमें वायरस से संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है। प्रकोप के समय, यह सोचा गया था कि प्रभावित व्यक्ति को हल्की सांस की समस्या होगी, जो कि आंतरिक रोगों से लड़ने की व्यक्ति की क्षमता के कारण कुछ दिनों के बाद ठीक हो जाएगी। लेकिन दूसरी ओर, यह उन लोगों के लिए बहुत घातक साबित हो रहा है जो हृदय रोग, मधुमेह, तीव्र श्वसन रोग और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं। इस पत्र में कोविड -19 इस अवधि के दौरान सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव के बारे में जानेंगे।

सूचक शब्द : (Keywords) कोविड-19, सामाजिक परिस्थितियों, भारतीय समाज, रोग।

प्रस्तावना :

कोरोना वायरस पहली बार 1930 में एक मुर्गी में पाया गया था जिसने इसके पाचन तंत्रको गंभीर रूप से प्रभावित किया था और बाद में 1940 में कई जानवरों में पाया गया था। यह बाद में 1960 में सर्दी-जुकाम वाले व्यक्ति में पाया गया। आखिरकार 2019 में चीन के वुहान में फिर से देखा गया और बाद में इसने पूरी दुनिया को अपने कब्जे में ले लिया और लगातार बढ़ रहा है। इसका शाब्दिक अर्थ कोविड-19 नामक विश्व स्वास्थ्य संगठन के रूप में व्याख्या किया गया है जिसमें Co का अर्थ है कोरोना और Vi का अर्थ है वायरस, और D का अर्थ रोग और 19 का अर्थ वर्ष 2019 है जिसमें यह वायरस मिला था। इस प्रकार इसका शाब्दिक अर्थ समझाया गया है। कोविड-19

2019 में चीन के वुहान में एक नए कोरोना वायरस (कोविड-19) की पहचान हुई थी। यह एक नया कोरोना वायरस है जिसकी पहचान पहले इंसानों में नहीं की गई थी। कोविड-19 का पहला प्रकोप दिसंबर 2019 की शुरुआत में चीन के वुहान में हुआ, जहां एक बड़ा पशुधन बाजार है जहां वायरस-19 के पहले मामले सामने आए थे। इसके बाद दुनिया भर में इसका प्रकोप हुआ जिसे 2019-20 में महामारी के रूप में जाना जाने लगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने मार्च 2020 में कोविड-19 के प्रकोप को महामारी और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया है।

अध्ययन का उद्देश्य:-

- ❖ कोविड-19 के बारे में जानेंगे।
- ❖ कोविड-19 इस अवधि के दौरान सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव के बारे में जानेंगे।

अनुसंधान विधि: -

यह वर्तमान अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और वेबसाइटों की सामग्री शामिल है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने मार्च 2020 में कोविड-19 के प्रकोप को महामारी और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया है। कोविड -19 वायरस मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की नाक से लार या छींक की कुछ बूंदों से फैलता है, जिसमें वायरस से संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है। प्रकोप के समय, यह सोचा गया था कि प्रभावित व्यक्ति को हल्की सांस की समस्या होगी, जो कि आंतरिक रोगों से लड़ने की व्यक्ति की क्षमता के कारण कुछ दिनों के बाद ठीक हो जाएगी। लेकिन दूसरी ओर, यह उन लोगों के लिए बहुत घातक साबित हो रहा है जो हृदय रोग, मधुमेह, तीव्र श्वसन रोग और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं। कोविड-19 एक नई बीमारी है जो किसी व्यक्ति के फेफड़े, श्वसन तंत्र और अन्य अंगों को प्रभावित कर सकती है। आप कोविड-19 को फैलने से रोकने के लिए जितना हो सके जरूरी स्वच्छता उपायों का पालन कर सकते हैं। कोविड -19 को 2019 में एक प्रकोप से जोड़ा गया है, जो एक नए प्रकार का कोविड-19है जो किसी व्यक्ति के फेफड़ों और श्वसन प्रणाली को गंभीर रूप से प्रभावित करता है। दूसरे शब्दों में, यह बहुत बड़े और विविध प्रकार के वायरस के पूरे नए परिवार के सदस्यों में से एक है जो आम तौर पर सामान्य सर्दी जैसी बीमारियों का कारण बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, "कोविड-19 वायरस का एक बड़ा परिवार है जो सामान्य सर्दी से लेकर गंभीर बीमारियों जैसे मिडिल ईस्ट रेस्पिरेटरी सिंड्रोम (MERS) और सीवियर एक्यूट सिंड्रोम (SARS) तक की बीमारियों का कारण बनता है।" गठित"। कोरोना वायरस के संपर्क में आने के बाद लक्षण दिखने में 14 दिन तक का समय लग सकता है। उनके अनुसार, कोविड-19 वायरस का एक बड़ा परिवार बनाते हैं जो पक्षियों, स्तनधारियों और मनुष्यों को संक्रमित करते हैं और मानव से मानव में फैलते हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ (एनआईएच) के अनुसार, कोरोनवीरस-19 के निम्नलिखित समूहों को प्रभावित करने की अधिक संभावना है:

1. छोटे बच्चे

2. 65 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति।

3. गर्भवती महिलाएं।

कोविड-19 के शुरुआती लक्षण

- एक नई और लगातार खांसी: जब कोई व्यक्ति एक घंटे से अधिक समय तक खांसता है या 24 घंटे में तीनयाअधिकबारखांसताहै।
- बुखार: जब किसी व्यक्ति का तापमान 100 से ऊपर हो।
- गंध या स्वाद को महसूस न कर पाना।

कोविड -19 के लक्षण सभी के लिए समान नहीं होते हैं।

- फ्लू की तरह लेकिन बुखार नहीं:- इससे सिरदर्द, सूंघने की शक्ति का ह्रास होता है नहीं, मांस पेशियों में दर्द, खांसी, गले में खराश, सीने में दर्द लेकिन बुखार नहीं।
- फ्लूकीतरहऔरबुखारभी: - इसमेंसिरदर्द, सूंघने की क्षमता में कमी, गले में खराश, बुखार, भूख न लगना शामिल हैं।
- गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल (पेटऔरआंतों):- सिरदर्द, गंध की कमी, स्वर बैठना, भूख न लगना, गले में खराश, दस्त, सीने में दर्द, खांसी नहीं।
- थकान (स्तर-1):- सिरदर्द, सूंघने की क्षमता में कमी, सीने में दर्द, स्वर बैठना, थकान।
- भ्रम (स्तर-2) सिरदर्द, सूंघने की क्षमता में कमी, भूख न लगना, गले में खराश, सीने में दर्द, बुखार, थकान, भ्रम, सोच में दर्द।
- पेट और प्रजनन (स्तर-3) सिरदर्द, सूंघने की क्षमता में कमी, भूख न लगना, गले में खराश, सीने में दर्द, थकान, भ्रम, मांस पेशियों में दर्द, पेट दर्द, सांस लेने में समस्या, स्वर बैठना।
- इसके अलावा उल्टी, दस्त और पेट दर्द बच्चों में कोरोना वायरस के लक्षण हो सकते हैं।

यह उनके द्वारा फैलाया जाता है

- प्रभावित व्यक्ति के खांसने या छींकने पर सांस की बूंदें निकलती हैं।
- कोविड-19 से संक्रमित व्यक्ति से सीधा संपर्क।
- किसी ऐसी वस्तु को छूना जो पहले ही वायरस के संपर्क में आ चुकी हो।

उत्तर जीविता

- साबुन और पानी उपलब्ध न होने पर कम से कम 60% अल्कोहल वाले सैनिटाइज़र का उपयोग करना चाहिए।
- बाहर खांसने या छींकने से बचें।
- बार-बार चेहरे, नाक और आंखों को न छुएं।
- बीमार लोगों से दूर रहें।

- सार्वजनिक स्थानों पर सामाजिक दूरी बनाए रखें।
- हमेशा मास्क का प्रयोग करें।
- बार-बार छुई जाने वाली वस्तुओं को सैनिटाइज करें।
- जहां तक हो सके सार्वजनिक परिवहन के स्थान पर निजी वाहनों, पैदल या साइकिल का प्रयोग करें।
- सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करते समय, मास्क और सैनिटाइज़र के उपयोग सहित कोरोना–19 से बचाव के लिए कई सावधानियों का पालन करें।
- जितना हो सके घर पर ही रहें, जरूरी काम पर बाहर जाएं।
- स्वास्थ्य विभाग और डब्ल्यूएचओ के निर्देशों का पालन करें।
- कोरोना वायरस के लक्षण दिखने पर घर में खुद को आइसोलेट कर लें।

भारत सरकार (केंद्र और राज्य स्तर) जनता, चिकित्सा संघों, नर्सों, गैर सरकारी संगठनों सहित कोविड-19 के मामलों को कम करने और नियंत्रित करने के लिए अपने-अपने स्तर पर कड़ी मेहनत कर रही हैमहामारी से लड़ रहे हैं। इसी तरह पुलिस अर्धसैनिक बल आदि भी इस महामारी के दौरान अपनी ड्यूटी पूरी लगन से निभा रहे हैं। भारत में पहला लॉकडाउन 24 मार्च से 31 मार्च तक कोविड-19 को नियंत्रित करने के लिए किया गया था, जिसे आगे बढ़ा दिया गया था। भारत के बाहर के यात्रियों के साथ कोविड-19 के मामले शुरू हुए। संक्रमण के पहले तीन मामले जनवरी से फरवरी के बीच हुए जब वुहान चीन से आया था। वे भी मार्च में इटली से आए थे। इन मामलों को देखते हुए, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने 14 दिनों के लिए बाहर जाने वाले अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए स्व-संगरोध नियम लागू करने के निर्देश जारी किए।

भारत में 20 मार्च, 2020 को जनता कर्फ्यू लगा दिया गया था। इसके बाद पूरे भारत में तालाबंदी कर दी गई, जिसके परिणाम व्यवसायों पर हानिकारक प्रभाव डालने वाले थे, जिसके कारण पूंजीपतियों को अपने लाभ के लिए या कुछ को सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए अपने श्रमिकों को बेदखल करना पड़ा। बहुत कम दर। इसी तरह हर व्यापारी, संगठन ने अपने कर्मचारियों की छंटनी शुरू कर दी और ऐसा नहीं करने वालों ने अपने मजदूरों के वेतन में कटौती करना शुरू कर दिया। इस तरह लाखों मजदूर अपने शहरों, गांवों में सड़कों पर उतर आए। वह बस जाने लगा। रेलवे और अन्य साधन बंद होने से उन्हें पैदल चलना पड़ा। इस दृश्य ने 1947 में भारत के विभाजन के इतिहास पर फिर से गौर किया। दूसरे शब्दों में, 24 मार्च, 2020 को अचानक हुए तालाबंदी ने लाखों प्रवासी कामगारों को परिवार, भोजन या नौकरी के बिना कठिन समय से गुजरने के लिए मजबूर कर दिया। दोनों पक्षों के कारोबारियों को भी काफी परेशानी हुई। कच्चे माल की आवक बंद हो गई और बाजार बंद होने से तैयार माल को बाजार से बाहर निकालना मुश्किल हो गया और बाजार बंद होने के कारण पिछले माल का भुगतान रोक दिया गया और सभी व्यापार ठप हो गए। जब से भारत स्वतंत्र हुआ है, तब से ऐसी कोई समस्या नहीं रही है जिसने समाज के हर वर्ग को बुरी तरह प्रभावित किया हो। लेकिन कोविड-19 ने भी समय दिखाया। आज हम अपने आस-पास देख सकते हैं कि वह अमीर है या गरीब, छोटा व्यापारी है या बड़ाव्यापारी। इसका असर आज हम हर जगह

देख सकते हैं। अस्पताल और श्मशान घाट की हालत बेहद खराब है। कोविड-19 के हमलों ने न केवल लोगों की बल्कि आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारणों से भी जान ली है। जहां कई लोगों की नौकरी चली गई, लेकिन उनकी नौकरी भी चली गई और कई लोगों की आजीविका चली गई। इससे हर जगह सिर्फ आर्थिक, भूखमरी और मानसिक पीड़ित ही मिल रहे हैं। भारत के अलग-अलग हिस्सों से कोविड-19 से प्रभावित कई तस्वीरें सामने आ रही हैं।

हमारे भारतीय समाज में आज सामाजिक स्तरीकरण का आधार वर्ग व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति की जाति को नहीं बल्कि उसकी शैक्षिक योग्यता, कौशल और योग्यता को महत्व दिया जाता है। आज का आधुनिक भारतीय समाज प्रगति के पथ पर है जो विकास के बारे में है लेकिन वास्तव में हम अभी भी मानसिक रूप से प्राचीन समाजों के निवासी हैं। हालांकि प्राचीन समाज बुरा नहीं था लेकिन उस समय कुछ कुर्तियां और जाति व्यवस्था थी जो उस समय के समाज की जड़ों में थी। जिन लोगों के प्रतिबंधों का उल्लंघन करना असंभव था, उन्हें उनके साथ जाति के सदस्य का हुक्का-पानी बंद कर दिया गया था या कभी-कभी उन्हें जाति से निकाल भी दिया गया था। लेकिन आज के आधुनिक समाज में भी जब हम इसे देखते हैं तो बहुत आश्चर्य होता है। आधुनिक समय में समाचारों में धर्म, महिला और जाति के आधार पर भेदभाव पढ़ा जा सकता है। हाल ही में अगस्त 2019 में, मध्य प्रदेश में एक Zomato डिलीवरी बॉय के एक व्यक्ति ने उसका ऑर्डर किया हुआ खाना लेने से इनकार कर दिया क्योंकि डिलीवरी बॉय मुस्लिम धर्म से था, यानी उसने यह कहते हुए अपना ऑर्डर लेने से इनकार कर दिया कि वह एक गैर-हिंदू है। इसी तरह अक्टूबर 2019 में हैदराबाद में भी स्विगी पहुंचाने वाले लड़के से उसका ऑर्डर किया हुआ खाना लेने से भी इनकार कर दिया, इसका कारण गैर-हिंदू था। इसी प्रकार, हमारे समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव की जड़ें हमारे भारतीय समाज में इस प्रकार निहित हैं कि शिक्षित महिलाओं को आज कई मायनों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है चाहे वह कामकाजी महिलाओं की समस्या हो या धार्मिक।जैसा कि भारत में कई धार्मिक स्थलों के साथ होता है। समाज आज। सबरीमाला, जिसे भगवान अयप्पा के नाम से भी जाना जाता है, भारत के केरल राज्य में स्थित एक 800 साल पुराना मंदिर है। लंबे समय तक, महिलाओं को इस मंदिर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी। केरल हाई कोर्ट ने 10 से 50 साल की लड़कियों और महिलाओं के मंदिर में प्रवेश पर भी रोक लगा दी थी। महिलाओं के अधिकारों पर एक बड़े हमले के रूप में। इसके खिलाफ, एक सभा ने सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दायर की, जिसने 28 सितंबर को फैसला सुनाया कि सभी उम्र की महिलाओं को सबरीमाला मंदिर में प्रवेश करने से रोकना सेक्सिस्ट था।

उसी तरह आज जब पूरी दुनिया एकजुट होकर करॉना महामारी से लड़ रही है, इसके विपरीत लोग अभी भी अपनी जाति और धर्म की कट्टरता से ऊपर नहीं उठ रहे हैं। जिसके बारे में हम आमतौर पर खबरें पढ़ सकते हैं। 22 अप्रैल, 2020 को महाराष्ट्र के 51 वर्षीय व्यक्ति ने राशन होम डिलीवरी का आदेश दिया था, लेकिन जब उसका डिलीवरी बॉय ऑर्डर लेकर आया, तो उसने अपना नाम पूछते हुए राशन लेने से इनकार कर दिया।कारण यह था कि डिलीवरी बॉय एक मुसलमान था। मुझे लगता है कि यहां यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि डिलीवरी बॉय ने कोरोना महामारी के संबंध में निर्देशों का पूरी तरह से पालन किया था, जिसका अर्थ है कि उसने अपने चेहरे पर दस्ताने और

हाथों पर नकाब पहने हुए थे। इसी तरह उत्तराखंड के नैनीताल जिले में 19 मई 2020 को कोरोना महामारी के कारण अलग-थलग पड़े एक उच्च जाति के लड़के ने गांव में रहने वाली एक छोटी जाति की महिला का हाथ से बना खाना खाने से मना कर दिया. जब मामला गांव के सरपंच के संज्ञान में आया तो उसने भी ऊंची जाति के लड़कों को समझाने की काफी कोशिश की लेकिन वे नहीं माने और बाद में उनके खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई. इसी तरह हिमाचल प्रदेश में भी एक चाचा-भतीजे को कोरोना महामारी के चलते आइसोलेट कर दिया गया। एकांतवास केंद्र के लिए खाना पकाने की जिम्मेदारी स्कूल की महिला कर्मचारियों के पास थी क्योंकि वह निचली जाति की थी। दोनों चाचा-भतीजों ने उसके हाथ का बना खाना खाने से मना कर दिया और उनके लिए खाना उनके घर से आता है। गांव के सरपंच ने उसके खिलाफ एससीएसटी एक्ट के तहत मामला दर्ज करने की मांग की है। 19 अप्रैल, 2020 को, इंडिया टुडे ने बताया कि एम्स दिल्ली, दुनिया का सबसे बड़ा चिकित्सा संस्थान है, जहां एक महिला दंत चिकित्सक ने आत्महत्या करने की कोशिश की क्योंकि वह एक छोटी जाति की थी। उसे उसके साथी उच्च अधिकारियों द्वारा एक छोटी जाति से संबंधित होने के कारण परेशान किया गया था। उन्होंने कई बार प्रशासन से शिकायत की लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इससे नाराज होकर उसने आत्महत्या करने का फैसला किया। यदि हम ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसी घटनाओं को देखें, तो हमें चौंकाने वाले तथ्य मिलते हैं कि ये जाति आधारित भेदभाव प्राचीन काल से हमारे समाज का हिस्सा रहे हैं। बीबीसी ने 28 अप्रैल 2021 को "एकांत के दौरान आईने के माध्यम से माँ और बेटी की भावनात्मक मुलाकात" की खबर प्रकाशित की। जिसमें रुक्की कुमार ने एक तस्वीर शेयर की है जिसमें वह कोरोना–19 से पीड़ित हैं और अपने घर में अकेले हैं.वह कांच के दरवाजे से अपनी 14 साल की बेटी से मिलते हैं. उसने कहा कि वह अपने घर के एक कमरे में अकेला था और उसने अपनी बेटी से फोन पर बात की, और जब उसकी बेटी से उसकी सेहत के बारे में पूछती है तो वह भावुक हो जाती है और जब वह कहती है कि मैं ठीक हूं तो उसे अपनी बेटी की आंखों में एक अलग तरह की खुशी और चमक दिखाई देती है। इसी तरह 26 मई को पंजाबी ट्रिब्यून में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक पिछले साल से कोविड-19 की वजह से हुई तालाबंदी के कारण प्रवासी कामगारों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। पंजाबी यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रोफेसर डॉ. लखविंदर सिंह के एक अध्ययन के अनुसार, कोविड-19 के कारण हुए तालाबंदी के बाद, पंजाब में लगभग 29.87% श्रमिक पंजाब के ग्रामीण क्षेत्रों से और 69.18% अन्य राज्यों से आते हैं। इनमें से 12.50% बारहवीं और कुछ के पास उच्च शिक्षा है, 36.95% मध्यम हैं और बहुत कम निरक्षर हैं। इसी तरह, अध्ययन से यह भी पता चला कि इनमें से 58.65% श्रमिकों की मासिक आय 8,000 रुपये है और केवल 14.36% वे हैं जो प्रति माह 10,001 रुपये से 15,000 रुपये कमाते हैं।इस प्रकार भारतीय समाज में सामाजिक संबंधों पर कोविड-19का गहरा प्रभाव पड़ा है।इस प्रकार हम देख सकते हैं कि कोविड-19 ने भारत की समग्र अर्थव्यवस्था और व्यक्तिगत अर्थव्यवस्था को बहुत प्रभावित किया है। आज भारत में हर कोई आर्थिक तंगी से जूझ रहा है।आज व्यक्ति का हर पहलू अर्थशास्त्र से जुड़ा हुआ है, जिसका उसके सामाजिक संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा है।2009 में प्रकाशित एक किताब, सोशल हिस्ट्री ऑफ हेल्थ एंड मेडिसिन इन कोलोनियल इंडिया, में कहा गया है कि 19वीं शताब्दी में प्लेग की चपेट में आने पर भारतीय समाज में जाति और

धर्म आधारित उपचारों का इस्तेमाल किया जाने लगा। सेना के अस्पताल में अलग-अलग जाति के मरीजों के लिए अलग-अलग व्यवस्था की गई थी। ब्रिटिश अधिकारी लिखते हैं कि उच्च जाति के लोग निम्न जाति के स्वास्थ्य सहायकों से दवा भी नहीं लेते थे, जिससे उनके धर्म के भ्रष्ट होने का खतरा है। इस तरह आधुनिक समाजों में भेदभाव अभी भी आम है।

सारांश:-

इस प्रकार, उपरोक्त चर्चा के दौरान, कोविड -19 के अवधि के दौरान सामाजिक परिस्थितियों में बदलाव के बारे में जानेंगे और सामाजिक परिस्थितियों पर कोविड-19 के प्रभाव पर चर्चा की गई। कोरोना वायरस दिसंबर 2019 में चीन के वुहान में लॉन्च किया गया था और जल्द ही दुनिया भर में फैल गया। इसे विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 2020 में महामारी घोषित किया गया था। इसका शाब्दिक अर्थ कोविड-19 नामक विश्व स्वास्थ्य संगठन के रूप में व्याख्या किया गया है जिसमें Co का अर्थ है कोरोना और Vi का अर्थ है वायरस, और D का अर्थ रोग और 19 का अर्थ वर्ष 2019 है जिसमें यह वायरसमिला था। इस प्रकार इसका शाब्दिक अर्थ समझाया गया है। कोविड -19 वायरस मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की नाक से लार या छींक की कुछ बूंदों से फैलता है, जिसमें वायरस से संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है। प्रकोप के समय, यह सोचा गया था कि प्रभावित व्यक्ति को हल्की सांस की समस्या होगी, जो कि आंतरिक रोगों से लड़ने की व्यक्ति की क्षमता के कारण कुछ दिनों के बाद ठीक हो जाएगी। लेकिन दूसरी ओर, यह उन लोगों के लिए बहुत घातक साबित हो रहा है जो हृदय रोग, मधुमेह, तीव्र श्वसन रोग और कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं।इसी तरह, भारतीय समाज में सामाजिक संबंधों पर इस कोविड-19के प्रभाव को देखते हुए, यह देखा गया कि कैसे इस वायरस का भारतीय समाज में हमारे सामाजिक संबंधों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। हालांकि इनका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, लेकिन हमने अपने समाज में पाए जाने वाले सामाजिक संबंधों पर इस कोविड-19 के नकारात्मक प्रभावों का ही विश्लेषण किया है और सामाजिक परिस्थितियों पर कोविड-19 के प्रभाव पर चर्चा की गई।

ग्रन्थसूची:-

1. G.S,Ghurye. (1977) Caste and Race in India. (PapularPraksashan, Bombay.
2. Mudhurima, (2015) Reading in Sociology. (New Acadamic Publishing Co. Jalandhar.
3. Ram Ahuja. (2015) Social Problems in India. (Rawat Publication jaipur.
4. S.C. Dube. (1990) Indian Society.National Book Trust India New-Delhi.
5. www.Wikipedia .com
6. www.Sociologyguide.com
7. https://www.who.int

8. ShrikrushnaSubhashUnhale (2020). "A Review on Corona Virus" World Journal of Pharmaceutical and Life Sciences, 6(4),109-115
9. Dr. Vijendra Shrikrushna Puranik, Impact of Coronavirus and Lockdown on Science and Research Studies, International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies (www.irjhis.com), ISSN : 2582-8568, Volume: 2, Issue: 4, Year: April 2021, Page No : 72-76, Available at : http://irjhis.com/paper/IRJHIS2104012.pdf
10. Diksha Rajput, (Dec. 21-27, 2020) Using ICT to cope with the impact of Covid-19: Response of the Educational Sector. University News,58(51)
11. Suresh Garg (July 06-12. 2020) "Digital Education: will it Help Overcome Post Covid-19 Concerns and Improve Quality of Higher Education?" University News,58(27), 3-7